सूरह हूद – 11

ये सूरत मक्की है

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahbab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohut books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronunciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

****

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

बाज़ अहदाफ

- इस सूरत का हदफ है इस्लाह के काम पर मुदावममात|58
- घफलत और लापरवाही के बग़ैर इस्लाह को जारी रखिए|
- जो सूरत नबी के नाम से शुरू होती है, उस नबी का उसमे खुसूसी तज़किरह होता है|
- रसूलुल्लाह ﷺने इस सूरत से मुताल्लिख इरशाद फरमाया: (शैबतानी हूद व अखूतुहा) तरजुमा: सूरह हूद और उस जैसी सूरतों ने मुझे बूढ़ा कर दिया| (सहीह उल जामे:3720)|59
- इस सूरत मे सात नबियों (नूह अलैहिस्सलाम,हूद अलैहिस्सलाम, सालेह अलैहिस्सलाम, लूत अलैहिस्सलाम, शोएब अलैहिस्सलाम, मूसा अलैहिस्सलाम और हारून अलैहिस्सलाम) का जीकर है| बताया जा रहा है के उन्होने अपनी खौम के ज़ुल्म व सितम किस तरह बर्दाश्त किया और इस्लाह का काम करते रहे|
- इन खिस्सो का तज़किरह करने के बाद इसका मखसद बताया गया के आप ﷺकी तसल्ली हो जाये| (आयत:120)

---

58 मज़ीद तफसील के लिए इस किताब को ज़रूर पढ़ें (मालिम फी तारीखिख इसलाह: अब्दुल अज़ीज़ बिन मुहम्मद अस सधान)

59 मज़ीद तफसील के लिए तफ़सीर इब्ने कसीर ज 4 / प 302 देखें)

बाज़ मौज़ूआत

1 कुरआन का मसदर और उसकी मुहिम और मुश्रिकीन का उसके ताल्लुख से मौखिफ| (1-5)

2 अल्लाह के फज़ल, इल्म और उसकी खुदरत की वुसत का बयान| (6-7)

3 अल्लाह की नेमतों के ताल्लुख से मुश्रिकीन का मौखिफ और उनकी सज़ा का बयान| (8-10)

4 अल्लाह की नेमतों के ताल्लुख से मोमिनो का मौखिफ और उनकी जज का बयान| (11)

5 मुश्रिकीन के इनाद की वजह से रसूल ﷺ के सीने का तंग होना और आप ﷺके लिए अल्लाह की हिदायत का जारी होना| (12)

6 कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन को चैलेंज के इस तरह का कोई कलाम पेश करें| (13-14)

7 कुफ़्फ़ार आखिरात पर दुनिया को तरजीह देते है और उनकी सज़ा का बयान| (15-16)

8. मोमिन और काफिर दोनों बराबर नहीं हो सकते| (17)

9. कुफ्फार और उनके बाज़ सिफात का तज़किरह| (18-22)

10. मोमिन और उनके बाज़ सिफात का तज़किरह| (23)

11. काफिरों और मोमिन की मिसाल बयान की गयी| (24)

12. नूह, हूद, सालेह, इब्राहीम, शोएब, मूसा अलैहिमुस्सलाम के वाखियात बयान किये गए| (25-99)

13. अल्लाह की सुन्नत के बन्दों को हलाक करने से पहले मुहल्लत देता है| (100-102)

14. खियामत के दिन बाज़ मनाज़िर पेश किये गए| (103-109)

15. कुरआन में इख्तेलाफ करने से मना किया गया, जिस तरह मूसा अलैहिस्सलाम की खौम ने तौरात में इख्तेलाफ किया| (110-111)

16. नबी ﷺ और मोमिनो को नमाज़, इस्तेखामत और सब्र का हुकुम दिया गया| (112-115)

17. अल्लाह की सुन्नत साबेखा उम्मतों को हलाक करने में के वो अपने ज़ुल्म और इनाद की वजह से हलाक हुए| (116-119)

18. कुरआन के खिस्सों की हिकमत के रसूल ﷺ को तसल्ली, मोमिनों को नसीहत और काफिरों के लिए डरावा| (120-123)

बाज़ अस्बाख

1. सख्त से सख्त हालत में भी दावत व इस्लाह का काम करते रहना चाहिए| 60
2. कुरआन के नुज़ूल के अव्वलीन मखासिद में से ये है के बन्दे अपने रब की इबादत करें और हर वख्त तौबा व इस्तेघ्फार करते रहें|
3. काफिर कुरआन को सुनना नहीं चाहते, इस तरह वो अल्लाह का मज़ाख उड़ाते है|
4. रिज्ख अल्लाह के ज़िम्मे है, और ये उसकी रहमत की दलील है, जो तमाम इंसानों, हैवानात, नबातात को शामिल है|
5. अल्लाह की बड़ी कारीगरी है जो उसने ज़मीन व आसमानों में दिखलाई है|
6. दुनिया के अहवाल हमेशा मुस्तखिल नहीं रहते|

7. दुआत व मुबल्लिघीन के लिए मुनासिब नहीं के वो किसी के एतेराज़ पर अपने काम से रुक जाएँ, क्यों के वो “अल हख्खुल मुबीन” के दाई है|

8. जो सिर्फ दुनिया चाहते है उन पर आखिरत की नेमतें हराम कर दी जाती है|

9. तमाम अम्बिया व रसूल नूह अलैहिस्सलाम से मुहम्मद ﷺ तक खालिस तौहीद की दावत देते थे और शिर्क से रोकते थे|

10. अम्बिया की फ़ज़ीलत और उनके इखलास की दलील ये है के वो दावत में कोई अजर तलब नहीं करते|

11. अल्लाह की जानिब तौबा व इस्तेघ्फार करने से दुनिया व आखिरत की भलाइयां और खैर हासिल होता है|

12. गुनाहों से तौबा व इस्तेघ्फार करना दुआ की खुबूलियत के शरायित में से है|

13. इस्लाम के अदब ये है के महमान की तकरीम की जाए और सलाम से इब्तेदा की जाए|

14. दीन से ताल्लुख और अल्लाह का तख्वा दुनिया और आखिरत की सआदत की दलील है|

15. रिख्खत खल्बी, बुर्दबारी और अच्छे अंदाज़ से मुजादला एक दाई की निशानी है|

16. मुहर्रिमात पर घीरत खाना भी दीन है|

17. हम जिंस परस्ती अख्लाखी जुर्म और इंसानियत का खातिल है|

18. नाप तोल में कमी बेशी करना और खयानत करना बहुत बड़ा जुर्म है जो दुनिया व आखिरत में सज़ा का मौजिब है|

19. अल्लाह ही असबाब का खालिख है|

20. अल्लाह ने लोगों को अखल दी, जिससे वो खैर व शर में फर्ख कर सकते है और उन्हें आज़ादी दी, फिर वो उनके इख्तियारात पर उनका हिसाब लेगा|

21. अच्छे दोस्त को इख्तियार करने की अहमियत वाज़ेह होती है के खियामत के दिन हर कोई एक दूसरे के दुश्मन होंगे सिवाए मुत्तखी दोस्तों के|

22. लोगों पर ज़ुल्म करना हलाकत का बड़ा सबब है और अल्लाह किसी बस्ती को उसी वख्त हलाक करता है जब वो दूसरों पर ज़ुल्म करने लगते है|

23. ज़ुल्म के मुआमले में नरमी इख्तियार करना और उसकी तरफ माइल होना, ये बुराई के मुआमले में मुशारिकत है और उनका अंजाम बुरा है|

24. सलाह तमाम आमाल की असास और दीन का सुतून है|

25. अहले इस्लाह का ज़ुल्म व फसाद पर खामोश रहना और अफ़सोस भी ना करना हलाकत का सबब बनता है|

26. कुरआनी खिस्सों में नबी ﷺ के लिए और पूरी उम्मत के लिए रहती दुनिया तक नसीहत और तसल्ली का सामान है|

27. जो अल्लाह पर तवक्कल करे अल्लाह उसके लिए काफी है|

60 मजीद तफसील के लिए इस किताब को ज़रूर पढ़ें (मालिम फी तरीखिख इस्लाह: अब्दुल अज़ीज़ बिन मुहम्मद अस सधान)

मुनासिबत / लतैफुत तफसीर

- सूरह यूनुस में इजमाल है, जबके सूरह हूद में तफसील है| (----------) (हूद:1)

हिफ्ज़ व तदब्बुर आयात व हदीस बराये तज़कीर, तज़किया, दावत और इस्लाह

आयत 1: (----------) (हूद:16)
तरजुमा: जो शख्स दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी ज़ीनत चाहता हो हम ऐसों को उनके कुल आमाल (का बदला) यहीं भर पूर पहुंचा देते है और यहाँ उन्हें कोई कमी नहीं की जाती – हाँ यही वो लोग है जिनके लिए आखिरत में सिवाए आग के और कुछ नहीं और जो कुछ उन्होंने यहाँ किया होगा वहां सब अकारक है और जो कुछ उनके आमाल थे सब बरबाद होने वाले है|

आयत 2: (----------) (हूद:85)
तरजुमा: ऐ मेरी खौम! नाप तोल इन्साफ के साथ पूरी पूरी करो, लोगों को उनकी चीज़ें कम ना दो और ज़मीन में फसाद और खराबी ना मचाओ|

हदीस: (----------) (सहीह बुखारी:2078)
तरजुमा: अबू हुरैरह रज़िअल्लाहुअन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते है के, आप ने फ़रमाया के, एक ताजीर लोगों को खर्ज देता है, जब किसी को तंग पाता तो अपने नौजवानों से कहता, उसको माफ़ करदो, शायद के अल्लाह ताला हम लोगों को भी माफ़ करदे, चुनाचे अल्लाह ताला ने उसको भी माफ़ कर दिया|